अक्षर

अक्षर
अक्षर-यात्रा
करते हैं :
अक्षर
अक्षरों से
जूझते हैं
अक्षर
अक्षरों से
प्रेम करते हैं
अक्षर
अक्षर की
पूजा करते हैं
अक्षर की गतिशीलता ही
जीवन की
गतिशीलता है
अक्षर
धरती से आकाश तक
तरंगित
होते रहते हैं

-दुर्गाप्रसाद झाला

पहली होली...

सोलह सावन से पहले ही
पहली होली खेला था...
%काशी% में नहीं किंतु
काशी के साथ खेला था...
रंगों का रंग गंध सुगंध
उस समय पता चला था...।
किशोरावस्था के सुगंध
पहली होली के रंग...
रंगों में नहाकर
लाल पीला होकर
मैं आसमान में उड़ने लगा था ।
हंसता ही चला जा रहा था
मैं आसमान में उड़ता ही
चला जा रहा था
रंग में भंग मिलता ही जा रहा था
कुछ समय बाद...
छोड़कर आंचल देश के
होकर परदेस के परिवेश में...
खेलूं होली किसके संग...
डालूं यहां किसको रंग...
यहां अपने बेगाने
सभी हैं वीराने
रिश्ता नाता दूर हुआ...
सबको रोजी रोटी की फिकर है ।
समीर
होकर अधीर
उड़ाने लगा अबीर
पूर्वी बसंत की बयार
बदल गया...
बदल गया है
बसंत शिशिर मौसम ।
लोग यहां...
होली के दिन सब लोग
यहां रंगों में रंगीन मिलते हैं ।
वरना दूसरे दिन जिंदगी की
वजह से सब गमगीन मिलते हैं
जरा सुनो जिंदगी तस्वीर भी है
तकदीर भी है फर्क रंगों का है
मनचाहा रंगों से बने तो तस्वीर
अनजाने रंगों से बने तो
नसीब मिलते हैं ।।
उस होली को
बतीस बरस बीत गए
आज तक जमीन पर बैठे-बैठे
आसमान में उड़ने वाला
जहाज नहीं मिला ।
जीवन की पहली होली में
हंसने का फिर वह

मौका ए राज
नहीं मिला ।।
उस जहाज को
ढूंढ रहा हूं ।
हंसी की उस
राज को ढूंढ रहा
हूं ।।

मनोज शाह
मानस, नारायणा गांव ,नई दिल्ली 110028 ,मो.नं.7982510985

तेरी चाहत

तेरी चाहत में मैं, क्या से क्या हो गई
तुम बने देव तो मैं, दुआ हो गई ।
प्रेम में जब पिया तुम बनारस बने
मैं पतित - पावनी गंगा हो गई ।।
तेरी चाहत में मैं क्या से क्या हो गई ..
हो के वैरागी तुमने शिवाला चुना
विष हलाहल का जब तुमने प्याला चुना।
ध्यान में मग्न तुम थे महादेव से
मैं भी तपकर के शिव की शिवा हो गई।।
तेरी चाहत में मैं क्या से क्या हो गई..
बनके मोहन जो बंसी बजाया कभी
अपना सर्वस्व तुमको बनाया तभी ।।
द्वारकाधीश जब रुक्मिणी के हुए
वृंदावन में बसी राधिका हो गई ।।
तेरी चाहत में मैं क्या से क्या हो गई..
प्रीत की रीत ऐसे निभाए सजन
बनके रघुवर धरा पर जो आए सजन
हाथ में जब लिया तुमने शिव का धनु
लेके वरमाला मैं भी सिया हो गई ।।
तेरी चाहत में मैं क्या से क्या हो गई..
फ़र्ज की राह पर जब बने तुम लखन
चल दिए साथ रघुवर के होके मगन
प्रेम दीपक तो मैंने जलाया पिया
राह तकती रही उमिंला हो गई
तेरी चाहत में मैं क्या से क्या हो गई
ने कर दी समर्पण हर एक रूप में
साथ चलती रही छांव में धूप में
जब लगा प्रेम इतना भी आसा नहीं
तुम गगन हो गये, मैं धरा हो गई
तुम गगन हो गये ,मैं धरा हो गई

सुनीता आनन्द मिश्रा कुशीनगर

विधा:गीत

मापनी:
(32,यति 16,16 पर
टेक 18,18)
आज बिरज में होली है रसिया
रंग अबीर उड़ा घर द्वारे,
नाचें गोप गोपियां सारे।
सम्मोहित बंशी धुन करती,
सभी गोपियों का मन हरती।।
खेलें होली सबके मन- बसिया।
आज बिरज में होली है रसिया।।
राधा लिये गुलाल हाथ में,
कान्हा जिनके सदा साथ में।
आज श्याम रंग में हैं राधा।
आज नहीं है कोई बाधा।।
आज नजर आता मन फँसिया।
आज बिरज में होली है रसिया।।
पूर्ण चंद्रमा नभ से झाँके,
हुलस रहे हैं ब्रज के बाँके।
आज रंगों से भीगीं चोली।
ढूँढ रहे सब ही हमजोली।।
संयम काटता अनंगी हँसिया।
आज बिरज में होली है रसिया।।

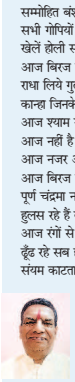

राज किशोर वाजपेयी 'अभय '

मोबाइल:9425003616

हार में भी जीत

क्या खूब कहा है किसी ने,
जो अपनों की मुस्कान के लिए
अपनी हार को भी गले लगा लेता है,
वो दरअसल दिलों की जंग जीत जाता है।

दूसरों की खुशी में जो
अपना स्वार्थ भूल जाता है,
वही सच्चा विजेता है,
जो खुद से ऊपर उठ जाता है।

हार मान लेना कमजोरी नहीं,
कभी-कभी ये प्रेम की भाषा होती है,
जहाँ अहंकार झुक जाता है,
वहीं रिश्तों की परिभाषा होती है।

पर जब बात हो अपने लक्ष्य की,
तो मन में ज्वाला जलानी है,
जोश और जुनून के संग
हर मंज़िल को पाना है।

विश्वास की डोर थामे रखो,
परिश्रम को अपना मित्र बनाओ,
पसीने की हर बूँद से
सपनों का दीप जलाओ।

जो दूसरों के लिए झुकता है,
वो अंदर से अटल खड़ा होता है,
क्योंकि सच्ची जीत वही है
जहाँ प्रेम और लक्ष्य दोनों बड़ा होता है।

– नेहा कुमारी

कागज़ और कर्म

कुछ कागज़ सचमुच
रद्दी बन जाते हैं,
और कुछ वही कागज़
धर्म का दीप जलाते हैं।
शब्द ही तो हैं
जो साधारण को असाधारण बनाते हैं,
सूखी पत्तियों जैसे पन्नों में भी
जीवन-सूत्र सजाते हैं।
कागज़ की कीमत क्या होगी,
कीमत तो भावों की होती है,
स्याही से नहीं,
आस्था से पहचान होती है।
इसलिए मैं भी सोचती हूँ –
जीवन का हर पन्ना लिखूँ ऐसे,
कि पढ़े जो कोई
उसके मन में उजियारा बरसे।
तन तो मिट्टी है,
एक दिन मिट्टी हो जाएगा,
पर गुणों का सुवास
सदियों तक साथ निभाएगा।
अच्छे कर्मों की स्याही से
मैं अपनी तकदीर सजाऊँ,
कागज़ सा यह जीवन मेरा
एक पावन ग्रंथ बनाऊँ।

– नेहा कुमारी

मुख सारे पीले लाल

मुख सारे पीले लाल,गोरे हो या काले गाल।
मद भरे नयनों की, बानगी न दीजिए।।
गालियों का गलियों में,ठहाकों के दलियों में।
रंग भंग अधनंग, सा रा रा रा कीजिए।।
हाथ में हो पिचकारी, होंठों पर भद्दी गारी।
देख ऐसे नर नारी, आनंद ही लीजिए।।
भीगी चोली भीगी साड़ी, देख देख कर कभी।
हाथ जोड़ विनती है, कभी मत रिझिए।।

पंकज शर्मा तरुण
पिपलिया मंडी मध्य प्रदेश

हे देवभूमि तेरे पास आना चाहूं!!

हे देवभूमि तेरे पास आना चाहूं!!
हे देवभूमि तेरे पास आना चाहूं!!
दूर हु पास आना चाहूं
मैं अब तो मैं तुझे पाना चाहु
हे देवभूमि मैं तेरे पास आना चाहूं !!
इस दूरी से एहसास के वक्त को मैं जल्दी निकलना चाहूं
तुझ में बसी खुली सांस खुली हवा मैं वापस पाना चाहूं
हे देवभूमि मैं तेरे पास आना चाहूं!!
जहां जाकर मिलती है मुझे मन की शांति
वह शांति में वापस लाना चाहूं
जहां जाकर होती है मेरी सुबह रोशन
वह रोशनी में मैं फिर से जालना चाहूं
हे देवभूमि मैं तेरे पास आना चाहूं!!
शहर की भाग दौड़ से अब थोड़ा बचना चाहूं
मैं तेरी गोद में आकर अब तो थोड़ा सोना चाहूं
शोर शराबा कानों में चुभ रहा,
यह चुभन में झट से मिटाना चाहूं
हे देवभूमि मैं तेरे पास आना चाहूं!!
थकावट महसूस हो रही
अब तो यह थकावट मिटाना चाहूं
तुझ में समाकर मैं फिर से उमंग भरना चाहूं
हे देवभूमि मैं तेरे पास आना चाहूं!!
खाना रोज खाती हूं पर यह स्वाद मैं मिटाना चाहूं
मां के हाथों का स्वाद अब थोड़ा सा लेना चाहूं
भूख में व्याकुल सा मन मेरा
अब तो कुछ अच्छा चखना चाहूं
हे देवभूमि मैं तेरे पास आना चाहूं!!
शहर के सीधे रास्तों पे,अब थकना ना चाहूं
प्रकृति की सुंदरता, फिर से महसूस करना चाहूं
शरीर थका मन थका , इसको निर्मल करना चाहूं
देवों की नगरी में वापस फिर लौटना चाहूं
हे देवभूमि मैं तेरे पास आना चाहूं!!

प्रियंका अधिकारी रावत
उत्तराखंड

ऋतुराज बसंत

मौसम के बदलाव से, हुआ शीत का अंत।
नव पल्लव हैं आ गये,लेकर मधुर बसंत।।1।।
फूल टेसू फलाश से,सुरभित हुआ जहान।
प्रियतम से मिलने प्रिया,गाती मंगल गान।।2।।
ऋतु आ गई बसंत की, हर्षित है संसार।
पीली चादर ओढ़कर, धरा हुई गुलजार।।3।।
गुलशन फूलों से हुआ,उपवन का हर छोर।
आया मधुर बसंत है,वन में नाचे मोर।।4।।
कोयलिया है कूकती,देख वसंती रंग।
भ्रमर ठिठौली है करे, बनकर मस्त मलंग।।5।।
आम्र मंजरी छा गई,बहती मंद बयार।
आने से मधुमास के,बजते मन के तार।।6।।
मंद हवा में झूमती, है गेहूँ की बाल।
उर आनंद समा रहा,कृषक हुआ खुशहाल।।7।।
आने से ऋतुराज के, पंछी करते शोर।
देखे दृश्य "नवीन" यह,मन में उठें हिलोर।।8।।

रामगोपाल निर्मलकर 'नवीन'
धनौरा, जिला-सिवनी (म.प्र.)

उनको तो आता है सिर्फ झगड़ा करना

उनको तो आता है सिर्फ झगड़ा करना।
झगड़ा भी छोटा नहीं, बड़ा तगड़ा करना।।
क्या करें बात उनसे हम।
उनका तो काम है बस एक।।
छोटी छोटी बातों पर हंगामा खड़ा करना।
उनको तो आता है----------।।
हम कहते नहीं ना उनसे,
जब कहते हैं वो कुछ हमसे।।
काम उनका कर देते हैं।
नहीं होते हम गुस्सा उनसे।।
इतना होते हुए भी हमसे खुश नहीं है।
उनका है सिर्फ मकसद, हंगामा खड़ा करना।।
उनको तो आता है----------।।
उनके हैं शौक बहुत निराले।
काम धंधे हैं उनके बहुत काले।।
अभिमान उनको है इतना।
छाये हैं उनकी आँखों पर जाले।।
इंसाफ-ईमान वो रखते हैं, पैरों के नीचे।
छोड़ते नहीं है अभी भी वो, हमको गुलाम मानना।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ जी.आजाद तहसील एवं जिला-बारां(राजस्थान)

होली पर विशेष जोगीरा

1.फागुन में फगुनाता आया, छैला बांकेलाल।
कहीं निगाहें कहीं निशाना, डगमग होती चाल।
जोगीरा सा रा रा रा रा..
2 .मंद हुई है गुंडागर्दी, बढ़ता यूपी आज।
दुनिया देख रही है सारी, बुलडोजर का राज।
जोगीरा सा रा रा रा रा...
3 .जमकर ढ़ोल बजाता आता, हर मौसमी चुनाव।
जनता सब कुछ जान गई है, उल्टे पड़ते दाँव।
जोगीरा सा रा रा रा रा..
4 .पीकर भांग मस्त चुन्नू ने, कुत्ते से की बात।
तू तो जंगल का था राजा, कबसे बदली जात।
जोगीरा सा रा रा रा रा..
5 .रासरंग में डूबे बांके, रंग लगाते लाल।
बीबी नहीं पड़ोसन थी वो, सिर पर बचे न बाल।
जोगीरा सा रा रा रा रा...
6 .भारत की इक ओल्ड पार्टी, जाती हार चुनाव।
ईवीएम को दोषी कहती, डूबी उनकी नाव।
जोगीरा सा रा रा रा रा..
7 .नया बखेड़ा रोज उठाते, नेता जी का जोश।
हाथ जेब में डाले रहते, दुनिया का न होश।
जोगीरा सा रा रा रा रा..
8 .तंत्र बुद्धि से खींची फोटो, खूब मारते शान।
पास दिखे पहचान न आए, झूठा गढ़ते ज्ञान।
जोगीरा सा रा रा रा रा..9 .मुँह पर रंग लगाकर आए, घर में बांकेलाल।
भैया कहती आई पत्नी, होली बड़ी कमाल।
जोगीरा सा रा रा रा रा. .**शर्मिला चौहान ठाणे महाराष्ट्र)**

जो गया उसकी

दिल में कोई भी कहानी क्या रखें।
जो गया उसकी निशानी क्या रखें
खानदानी लोग है जाहिल नहीं।
बदजुबानी, बदगुमानी क्या रखें
चाह इस की तख्त है ना ताज है।
नाम दिल का राजधानी क्या रखें
उम्र ढल कर दे रही बचपन हमे।
अब बचा कर के जवानी क्या रखें
हर किसी से वास्ता, बतलाओ तो।
घर में है बिटिया सयानी क्या रखें??
पतझड़ों को मिल चुका घर का पता।
अब कोई हसरत सुहानी क्या रखें??
यूं भी है मेहमान सी कुछ साल की।
क़ैद कर के जिंदगानी क्या रखें??

प्रणय प्रभात श्योपुर (मप्र)

कुछ अजनबी खास होते हैं

नई जगह नए सफर में
सभी अजनबी होते हैं ।
उनमें से ही कुछ अलग
कुछ अजनबी खास होते हैं ।

अजनबी साथी जब मिलते है
कोई एक खास उनमें होता है ।
उस खास अजनबी साथी का
साथ बहुत अच्छा लगता है ।

आंख से आंख जब लड़ती है
मोहब्बत की शुरूवात होती है ।
मोहब्बत के सफर में जाने क्या
कुछ अजीब दिल में होता है ।

अचानक जाने क्या होता है
दिल में भी कुछ कुछ होता है ।
मन में एक सपना सा लगता है
अजनबी साथी जब मिलता है ।

आंखों के सामने सूरत दिखती
मन मोहिनी सी मूरत लगती ।
दिल का चैन भी खो जाता है
मन खुशियों से भर जाता है ।

युवा उम्र में ऐसा ही होता है
रोग मोहब्बत का लगता है ।
मीठा मीठा दिल में दर्द होता है
प्यार का रोग जो लग जाता है ।

दिन का चैन रातों की नींद
को जाने क्या हो जाता है ।
मोहब्बत जब किसी से होती है
बस ऐसा ही अक्सर होता है ।

देखें बिन भी चैन न आये
दिल को कोई कैसे समझाये।
अपनापन सा भी लगता है
कुछ अजनबी खास जो होता है ।

डा अनन्तराम चौबे अनन्त, जबलपुर

विश्वास

मुझे मालूम है
मेरी तरफ जो गाड़ी आ रही है सौ किलोमीटर की रफ्तार से
वह मुझसे नहीं टकराएगी
जवान बाइकर मुझे बिना छुए तीर की तरह निकल जाएगा
आकाश में उड़ान भरते हुए मैं कॉफी का ले रहा हूँ आनन्द
पायलट के लाइसेंस की वैधता का प्रश्न फिलहाल मेरे दिमाग में नहीं है
मैंने अपना प्रोफाइल खुला रखा है स्पेस में स्वागत है सबके विचारों का

तुम्हें जिस तरह पढ़ना है, पढ़ो मुझे
और कर लो अपनी-अपनी भाषाओं में अनुवाद
मैं खुश हो जाता हूँ ,
कहूँ तो बच्चों की तरह भरने लगता हूँ किलकारी
दिल खोलकर रख देता हूँ
अनजान लोगों से बातें करते हुए
नजदीकी रिश्ते कभी खरोंच बर्दाश्त नहीं करते
बेहतर है परिचितों और प्रेमियों से

सतर्कता बरतने की सीख का सख्ती से हो अनुपालन
एक प्यारा सा पागलपन
जीवन को बहुधा खुशगवार बनाता रहता है
हँसते हुए मैंने कभी ठगा महसूस नहीं किया
अनजान लोगों से दूर रहने की चेतावनी पर भला कौन अमल करे
मेरा सबसे मजबूत विश्वास राह चलते हुए लोगों पर होता है ।

ललन चतुर्वेदी 9431582801

नारी

नारी तुम हो जीवन सारा
बहती नदिया का किनारा
तुम सृजना तुम स्रष्टा भी
नवजीवन तुम स्रष्टा भी
पुष्प सी एक कोमल करावली
तिमिर दूर करती विभावरी
प्रेम वात्सल्य से यूं हिय भरा
धैर्य, साहस है हृदय धरा
जग,संसार की जीवनदायिनी
सुंदर पावन सतत प्रवाहिनी
घर परिवार रक्षक ललना
सृजित संवरता घर अंगना
कभी आंगन में सजी तुलसी
कभी महकती मधु कामिनी सी
लघु से आंचल संसार समेटे
दायित्व निभा बरबस बैठे
गृह,जगत समरूप बनाये
चित्रित इक संसार सजाये
कभी कोमल कहीं विदूषी
वीरांगना तेजस्वी मानुषी
जीवनधारा संग पतवार हो
नारी तुम जीवन आधार हो
सुवासित बगिया कचनार सी
कभी तीक्ष्ण, तीव्र तलवार सी
नारी का हर स्वरूप निराला
प्रखर भानू सबसे आला
हर युग में जीवन बनाये
तभी नारी स्रष्टा कहलाये।

'कविता चौहान '

मां और जंगल

सुदूर तक फैला हुआ जंगल
मेरी मां का मन है।
ये लंबे लंबे वृक्ष,
उनके दुखों से थोड़े कम बड़े हैं।
दूर आसमान के कंधों तक ऊंचा पहाड़
और उनपर बरसते बादल
उनकी जीवन की आपत्तियां हैं
ये घास ये लताएं उनकी आकांक्षाएं हैं
और ये विस्तृत फैला हुआ मैदान उनका गोद
जहां हर दिन स्कूल से लौट कर,
सर रखे सो जाना चाहता हूं,
मैं खो जाना चाहता हूं।
जंगल को जंगल होने के लिए
लगता है सदियों का एकांत
जंगल फिर भी मां नहीं हो पाता
मां घर में सबके बीच रहकर भी
जंगल हो जाया करती है।

आनंद कुमार 8271753513

फागुन मास

आए फाल्गुन गुलमोहर ले लाल पलास,
झूमे आमों में बौर है मधुमास यह खास।
ऋतु उत्सव राग रंग संग घोल डोल रहा,
मगन चंचल नभ धरा पग हर्ष बोल रहा।
बाग वन खिले उठे मधुरस महकाए,
अंचल पे किसलय मलयज बरसाए।
पनघट झट सखी संग छेरा लिए,
धर धर रंग गुलाल माथ पे लगाए।
रंग वस्त्र तन मन भींगे लगे हर्षाय,
आकृष्ट मन होली का सौहार्द बढ़ाए ।

मदन मंडावी
ढारा, डोंगरगढ़, छत्तीसगढ़

'घर के मुरगी दार बरोबर''

बासा के भाजी अमोल हे,
अउ घर के मुरगी दार बरोबर,

शहर के छितका कुरिया महंगा,
गाँव के महल होये कोठार बरोबर

गाँव मा मही कोटना मा जाथे,
होटल मा अमरित धार बरोबर,

नता-गोता बिन पुछन्ता होगे,
अउ दोस्त-यार लम्बरदार बरोबर

कुकुर हा सोफ़ा में सुतत हे,
गऊ माता बिन पुछार बरोबर

घर के जोगी जोगड़ा कहाथे,
अउ बाहिर के अवतार बरोबर
जीवन चन्द्राकर 'लाल''

मुण्डरा
गुंडरदेही(छत्तीसगढ़)

हमदर्द

दर्द दे कर वह हमदर्द बन जाएं
समझना किसी कोने में प्यार बाकी है
अपनी छोटी लकीर देख कर मायूस थे वह
मेंने अपनी लकीर छोटी कर ली, उन्हें गुमान हो गया।
मंजिल कितनी ही ऊंची हो
रास्ते पैरों के नीचे से ही जाते हैं ।
सिलबट्टे पर पिस कर मेहंदी ने अपनी जान दे दी
हाथों ने कहा गहरा रंग ही नहीं चढ़ा।
उम्र भर तेरी डालीयों पर सजकर शान बढ़ाई
हमारा क्या कसूर पतझड़ की हवा हमें उड़ा ले गई।
मधुमास में गुलाब हस रहा था मदार पर
आने दो जेठ आषाढ़ देख लेना तब मेरी बहार।
कुछ लोग टटीरी के जैसे गलतफहमी पाल लेते हैं,
गिरते आसमान को मै अपने पंजों से थाम लूंगी।

बेला विरदी
1362, सेक्टर 18 जगाधरी 829586 3204

मुस्कराना लाजिमी है-

मंच पर चुप बैठे महबूब।
मंच पर चुप बैठे महबूब।।
पतियां धूम मचाएं खूब।
नारियां धूम मचावें खूब।।
घर जाकर तो जिया जलावे।
ज्यूं ज्येठ मास की धूप।।
पत्नी सरपंच गई कार्यालय
पतिदेव ने खोली है फाइल
अरजी लिए बढ़ा एक बंदा
चक्कर काटते मैं हूं शर्मिंदा
सड़क बनवा दो मेरे सरपंच
मैं सीधा सच्चा न छल प्रपंच
तैश में दिखाया कानूनी फंदा
पतिदेव का तो गुलत है धंधा
घूस देओ तो सड़क बने मलूक।।
काव्यगोष्ठी में कवयित्री जाती
काव्यपाठ में तालियां बजवातीं
देखके पति का पारा चढ़ जाता
तारीफ सुनके मुंह नीचे लटकाता
कोई युक्ति जेहन में न आबे सूझ।।
नारियां धूम मचावें खूब।।
पति खुद को परमेश्वर ही माने
पत्नी को बस नौकरानी जाने
ऊंचे पद आसीन से पति चिढ़ता
कलह से घर का माहौल बिगड़ता
भार्या शांति से रिश्ता निभाए बखूब।
नारियां धूम मचाबत खूब।।

रामसेवक गुप्ता, मकराना राजस्थान

यादें

कोई शाम आती हैं
किसी की याद लेकर
और उस यादों में खो जाते हैं हम
जिसकी यादों में हम खो जाते हैं
उसकी यादों में कोई और ही सही
पर हमारी यादों में सिर्फ वहीं....

वे दिन भी कितना अजीब था
जब वे हमारे क़रीब थे
कुछ अनकही बाते थी
जीसे हम कभी उन्हें
बोल नहीं पाए....
बस मुलाकात ऐसी थी
जीसे हम कभी भूल नहीं पाए....

जिंदगी के इस सफ़र में
बीत गई कई रातें तो,
बीत गई कई दिन
लेकिन बस रह गई उसकी यादें.....

टिग्गा चलान , ओडिशा

मां, तोर पीरा के मोल

तोर असन तकलीफ़ ला कोनो सही सकहीका मां?
नौ महीना कोख में धरके, हांसत-हांसत सहीस मां।
अपन शरीर ले खून देके, हड्डी ले कैल्शियम गला के,
हमन ला गढ़ेस माटी जइसे, खुद ला पीरा मं जरा के।
जब हमन रोवत रहन रात अँधियारी,
तैं जागत रहिस चुपचाप, आंखी में नींद भारी।
अपन नींद ला त्याग के, देधस मया के आलाप,
हमर हर एक पीरा ला, अपन सीना में धर लेस चुपचाप।
भूख-पियास सब भुला के, हमर सुख ला चुन लेस,
अपन हांस ला रोक-रोक के, हमन बर दुनिया गढ़ लेस।
आज जमाना बदल गे मां, रहा होगे आसान,
सरी जेनिस बाजार में मिलथे, भरगे घर-दुआर-समान।
फेर मया, ममता, त्याग के, कोनो नई बनिस कारखाना,
मां के पीरा, मां के अंचरा, येच हवय सच्चा खजाना।
तोर जइसन देवता धरती में, कोनो नई अवतार,
तोर चरण में सिर झुकाथों, बारंबार हजार।
ये कविता सिरिफ सब्द नई, ये तो मन के अरज हे मां,
तोर ऋणी रहिहूं जनम-जनम, एही मोर धरम हे मां।
तोर बेटा, दयाराम साहू(Daya)

ग्राम-डौकाबांधा (बंजारी)
जिला-कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

मृत्युभोज

इतनी निष्ठुरता मैं कहाँ से लाऊँ,
उठती सिसकियों में कैसे खाऊँ
बहते आँसुओं को कैसे झुठलाऊँ,
रोते हुए मन को कैसे बहलाऊँ
सुनी हुई वह माँग कैसे सँवारूँ,
टूटे हुए सपनों को कैसे सँभालूँ
बच्चों के सिर का साया जो उठ गया,
उस रिक्त आकाश को कहाँ से ढाँपूँ
सूनी पड़ी जो कलाइयाँ,
उन्हें फिर से कैसे सजाऊँ
जिसके श्रम से चलता था घर-आँगन,
उस हाथ का सहारा कहाँ से लाऊँ
बहन की राखी किसे बँधवाऊँ,
बूढ़े माता-पिता को क्या समझाऊँ?
बिलखते बच्चों से गद्दारी करके,
जमीन गिरवी रखकर उनकी–आखिर यह मृत्युभोज कैसे करवाऊँ
जो जीवित हैं, उनका जीवन पहले सँवारें,
मृतक के नाम पर क्यों घर उजाड़ें?
स्मृति अगर हृदय में सच्ची है,
तो आडंबर का यह बोझ क्यों उठाएँ?
इतनी निष्ठुरता मैं कहाँ से लाऊँ,
उठती सिसकियों में कैसे खाऊँ?
भूख नहीं है अन्न की मुझको–अगर बीच दर्द के उत्सव कैसे मनाऊँ?

B L Meena 'भानु'
व्याख्याता, जयपुर